eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

मूल्य शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय[1]
[1]सहायक प्राध्यापक, किरण टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, पण्डौल, मधुबनी, मिथिलांचल, बिहार

Received: 21 Jan 2026 Accepted & Reviewed: 25 Jan 2026, Published: 31 Jan 2026

Abstract

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन का दस्तावेज़ है, जिसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को समग्र, मूल्यपरक और कौशल–आधारित बनाना है। इस नीति में केवल ज्ञानार्जन ही नहीं, बल्कि चरित्र–निर्माण, नैतिक विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व और संवैधानिक मूल्यों के संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है। मूल्य शिक्षा को शिक्षा के प्रत्येक स्तर प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा में एकीकृत रूप से सम्मिलित करने की संस्तुति की गई है। यह नीति भारतीय परंपरा, संस्कृति, लोकतांत्रिक आदर्शों तथा वैश्विक नागरिकता की भावना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों में सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा, करुणा, सहयोग, पर्यावरण संरक्षण और लैंगिक समानता जैसे मूल्यों के विकास पर बल देती है। 21वीं सदी की चुनौतियों तकनीकी परिवर्तन, वैश्वीकरण, सामाजिक असमानता और नैतिक संकट के संदर्भ में मूल्य शिक्षा को राष्ट्रीय विकास और सामाजिक समरसता का आधार माना गया है। इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मूल्य शिक्षा को केवल एक विषय न मानकर, शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया का अभिन्न अंग स्वीकार करती है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके और वे जिम्मेदार, जागरूक तथा संवेदनशील नागरिक बन सकें।

मुख्य शब्द– मूल्य शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समग्र विकास, नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण, भारतीय संस्कृति, संवैधानिक मूल्य, सामाजिक उत्तरदायित्व, वैश्विक नागरिकता, समावेशी शिक्षा

Introduction

मूल्यों का संबंध मानव जीवन के यापन के ढंग से होता है। दर्शन और समाज के अनुसार मूल्यों की व्याख्या भी बदलती रहती है। धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य की संज्ञा दी जाती है, मानवशास्त्री संस्कृ ति लक्षणों या विशेषताओं को मूल्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मूल्यों को मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष या मुक्ति मानते हैं, मूल्य का प्रशिक्षण धार्मिक संस्थाओं में भी दिया जाता है। इसलिए मूल्यों के विकास में शिक्षा प्रक्रिया का विशेष महत्व होता है। मूल्य का विकास शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के साथ–साथ ही होता है। शिक्षा के उद्देश्यों के प्रतिपादन का आधार जीवन के मूल्य ही होते हैं जो शिक्षा के उद्देश्यों को मूल दिशा प्रदान करते हैं। शिक्षा के अंतर्गत पाठ्य सहगामी क्रियो का आयोजन भी मूल्य के विकास के लिए किया जाता है। यदि शिक्षा के स्वरूप में अतीत के संदर्भ में हुए परिवर्तन के कारण को जानने का प्रयास किया जाए तो विदित होता है कि जैसे–जैसे सामाजिक दर्शन एवं मूल्य में परिवर्तन हुए शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन हुए ।

मूल्य की अवधारणा – मूल्य "जो होना चाहिए" से संबंधित एक विचार का नाम है। यह हमारे विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को प्रभावित करता है। मूल्य का व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवस्था से बहुत गहरा संबंध है। मूल्य जीवन के उद्देश्यों और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करता है। हमारी सभी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

सामाजिक गतिविधियाँ मूल्यों से जुड़ी हुई हैं।मूल्य हमेशा इस भावना से जुड़ा होता है कि समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि जो मानदंड समाज के लिए सर्वाधिक वांछनीय हैं, उन्हें मूल्य कहा जाता है। इसलिए, मूल्यों का आदर्श नियमों से गहरा संबंध है। जो एक संगठन और एक संग्रह है जो व्यवस्था और शांति बनाए रखने की सार्वभौमिक मानवीय इच्छा की अभिव्यक्ति है।

मूल्य की परिभाषा –

थामस और जैनिकी के अनुसार "मूल्य वे वस्तुएं हैं जिनका सामाजिक समूह के सदस्यों के लिए कुछ अर्थ और तथ्य होते हैं" ।

डोरोथीली के अनुसार "मानवीय मूल्यों या मूल्यों या मूल्य व्यवस्था से हमारा तात्पर्य उस आधार को समझना है। जिसके अनुसार एक व्यक्ति एक मार्ग को अन्य मार्ग की अपेक्षा चुनेगा और अच्छे और बुरे का निर्णय करेगा" ।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज के कुछ आदर्श, नीति व मापदंड होते हैं जिनकी सहायता से व्यक्ति समाज की विशिष्ट घटनाओं एवं व्यक्तिगत व्यवहारों का मूल्यांकन करता है। यही लक्ष्य, नीतियां, आदर्श एवं मापदंड मूल्य कहलाते हैं।

मूल्य शिक्षा –

मूल्य शिक्षा का अभिप्राय ऐसी शिक्षा से हैं जिसमें मूल्य पर बल दिया जाता है इसके अंतर्गत शिक्षा प्रणाली का गठन इस प्रकार किया जाता है कि उसके सभी अंग मूल्य के संवर्धन में योगदान कर सके। शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि, "शिक्षा सभी प्रक्रियाओं का योग है, जिनके माध्यम से एक व्यक्ति समाज में, जिसमें वह रहता है, योग्यताओं, दृष्टिकोणों एवं सकारात्मक मूल्य के व्यवहार के अन्य रूप विकसित करता है।" शिक्षा व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह व्यक्ति की संवेदनशीलता एवं दृष्टि को प्रखर करती है, जिससे राष्ट्रीय एकता पनपती है, जिससे व्यक्ति में समझ और स्वतंत्र चिन्तन की क्षमता बढ़ती है। यह व्यक्ति को सत्य निष्ठा, कर्तव्य निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों के निर्वहन हेतु प्रशिक्षित करती है।

अतः विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि मूल्य एक प्रकार के मानक हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति चयनित व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने के लिए दिशा–निर्देश प्राप्त करता है। शिक्षा बालक की मूल प्रवृत्तियों में परिमार्जन कर उसके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाती है।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने आवश्यक मूल्यों के क्षरण पर ध्यान दिया है, और तदनुसार हमारे युवाओं में सामाजिक और नैतिक मूल्य विकसित करने के लिए शिक्षा को एक सशक्त उपकरण बनाने के लिए पाठ्यक्रम में पुनः समायोजन की आवश्यकता पर जोर दिया है। स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (2000) ने भी स्कूलों में मूल्य शिक्षा पर उचित जोर दिया है। इसने इस बात पर जोर दिया है कि स्कूली पाठ्यक्रम में ऐसे घटक शामिल होने चाहिए जो स्कूली बच्चों के दिमाग में आवश्यक मूल्यों को स्थापित कर सकें। निम्नलिखित कुछ कारण हैं कि आधुनिक दुनिया में मूल्य शिक्षा क्यों आवश्यक है–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

1. यह चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सही विकल्प चुनने, निर्णय लेने के कौशल को बढ़ाने में सहायता करता है।

2. यह छात्रों में दया, करुणा और सहानुभूति जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को विकसित करता है।

3. बच्चों की जिज्ञासा जागृत होती है, उनके मूल्यों और रुचियों का विकास होता है और इससे छात्रों के कौशल विकास में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, यह भाईचारे और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे छात्रों को सभी संस्कृतियों और धर्मों को स्वीकार करने में मदद मिलती है।

4. उन्हें उचित मूल्यों और नैतिकता के बारे में सिखाया जाता है, यह छात्रों के जीवन को एक सकारात्मक दिशा देता है।

5. यह छात्रों को जीवन में उनकी सच्ची चाहत की खोज करने में सहायता करता है, जिसमें समाज को वापस लौटाना और खुद को बेहतर बनाने का प्रयास करना शामिल है।

6. उम्र बढ़ने के साथ जिम्मेदारियों की एक विस्तृत श्रृंखला आती है। कभी–कभी, यह अर्थहीनता की भावना पैदा कर सकता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य विकार, मध्य जीवन संकट और किसी के जीवन में असंतोष बढ़ने का खतरा बढ़ जाता है। मूल्य शिक्षा कुछ छोटे तरीकों से लोगों के जीवन में खालीपन को भरने का प्रयास करती है।

7. इसके अतिरिक्त, जब लोग समाज और अपने जीवन में मूल्यों के महत्व के बारे में सीखते हैं तो वे अपने लक्ष्यों और जुनून के प्रति अधिक आश्वस्त और समर्पित होते हैं। इससे जागरूकता का उदय होता है, जिससे सोच–समझकर और फलदायी निर्णय ले सके।

मूल्य शिक्षा का महत्व –

➢ स्कूल में मूल्य शिक्षा का महत्व –

स्कूली पाठयक्रम में मूल्य शिक्षा को शामिल करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छात्रों को अच्छे नागरिक और व्यक्ति के रूप में विकसित होने के लिए आवश्यक बुनियादी नैतिकता सिखाता है। उनके भविष्य को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया जा सकता है, और जीवन में उनकी सच्ची खोजने की क्षमता को मूल्य शिक्षा द्वारा मदद की जा सकती है। प्रत्येक बच्चे की शिक्षा स्कूल में शुरू होती है, इसलिए पाठ्यक्रम में मूल्य–आधारित शिक्षा को शामिल करने से छात्रों को अपने शैक्षणिक करियर की शुरुआत से ही बुनियादी नैतिक सिद्धांतों को सीखने में मदद मिल सकती है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा में कहानी के उपयोग के माध्यम से छात्रों को मानवीय मूल्यों के मूल सिद्धांतों को सिखाया जा सकता है। मानवीय मूल्यों के अध्ययन के द्वारा हर बच्चे को अधिक दयालु, और सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति बना सकते हैं। जिससे उनमे भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा दे सकते हैं, इसके बिना शिक्षा निस्संदेह अधूरी होगी।

➢ व्यक्तिगत जीवन में मूल्य शिक्षा का महत्व –

हम सभी इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में अपने जीवन में शिक्षा के मूल्य को समझते हैं; यह हमारे जीवन और व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज में अच्छा पद और करियर पाने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है । यह न केवल हमारे व्यक्तित्व को बेहतर बनाता है बल्कि हमें मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक रूप से भी आगे बढ़ाती है। एक बच्चे की बचपन की महत्वाकांक्षाओं में डॉक्टर, वकील या आईएएस अधिकारी बनना शामिल होता है। हर माता–पिता अपने बच्चों को उच्च पदस्थ अधिकारी के रूप

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

में चित्रित करना चाहते हैं। यह तभी संभव है जब युवाओं के पास अच्छी शिक्षा हो। परिणामस्वरूप, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शिक्षा हमारे जीवन में अत्यंत आवश्यक है, और सफल होने के लिए हम सभी को इसे प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

मूल्य शिक्षा के प्रकार –

➢ **सांस्कृतिक मूल्य–** सांस्कृतिक मूल्य में किसी समाज के विश्वास दृष्टिकोण और प्रथाएं शामिल होती हैं । इन मूल्यों को धर्म इतिहास परंपरा और सामाजिक मानदण्डों जैसे विभिन्न कारकों द्वारा आकार मिलता है। सांस्कृतिक मूल्यों का संबंध इस बात से है कि क्या सही है और क्या गलत के साथ ही परंपराएं और व्यवहार से हैं। भाषा, नैतिकता, सामाजिक पदानुक्रम, शिक्षा, कानून, अर्थशास्त्र, दर्शन और कई सामाजिक संस्थाएँ सभी सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाते हैं।

➢ **नैतिक मूल्य –** इसके अन्तर्गत दूसरों और स्वयं के अधिकार का सम्मान करना, प्रतिबद्धताओं का पालन करना, दूसरों के साथ अनावश्यक विवादों से बचना, धोखाधड़ी और बेईमानी से बचना, लोगों की प्रशंसा करना और उनसे काम कराना और दूसरों को प्रोत्साहित करना शामिल है।

➢ **निजी आदर्श –** निजी आदर्श का विकास बाहय संसार के अनुभव से होता है तथा समय के अनुसार इन्हें बादल भी लिया जाता है व्यक्तिगत मूल्यों में वह सब कुछ शामिल है जो एक व्यक्ति को सामाजिक संपर्क में चाहिए। व्यक्तिगत मूल्यों में सौंदर्य, नैतिकता, आत्मविश्वास, आत्म–प्रेरणा, नियमितता, महत्वाकांक्षा, साहस, दूरदर्शिता, कल्पना आदि शामिल हैं।

➢ **आध्यात्मिक मूल्य –** आध्यात्मिक मूल्य सबसे बड़ा नैतिक मूल्य है। पवित्रता, ध्यान, योग, अनुशासन, नियंत्रण, स्पष्टता और ईश्वर के प्रति समर्पण आध्यात्मिक गुणों के उदाहरण हैं। आध्यात्मिक मूल्य शिक्षा आत्म–अनुशासन अवधारणाओं पर जोर देती है। आत्म–अनुशासन से संतुष्टि, इच्छाओं का अभाव, सामान्य लालच और गंभीरता से मुक्ति।

➢ **सामाजिक आदर्श –** एक व्यक्ति दुनिया में तब तक अस्तित्व में नहीं रह सकता जब तक वह दूसरों के साथ संवाद नहीं करता। लोग प्यार, स्नेह, दोस्ती, महान समूह, संदर्भ समूह, आतिथ्य, साहस, सेवा, न्याय, स्वतंत्रता, धैर्य, क्षमा, समन्वय, करुणा, सहिष्णुता इत्यादि जैसे सामाजिक मूल्यों की तलाश में हैं।

➢ **सार्वभौमिक मूल्य –** मानवीय दुर्दशा की धारणा सार्वभौमिक आदर्शों द्वारा परिभाषित होती है। हम सार्वभौमिक आदर्शों के माध्यम से स्वयं को मानव जाति और ब्रह्मांड के साथ पहचानते हैं। जीवन, आनंद, भाईचारा, प्रेम, सहानुभूति, सेवा, स्वर्ग, सत्य और अनंत काल सार्वभौमिक मूल्यों के उदाहरण हैं।

मूल्य शिक्षा जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने में कैसे मदद करती है –

1. किसी व्यक्ति के विकास के लिए मूल्यों की शिक्षा महत्वपूर्ण है। इससे उन्हें कई तरह से फायदा होता है. मूल्य शिक्षा के माध्यम से, आप अपने जीवन के सभी लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं ।

2. यह छात्रों को यह जानने में मदद करता है कि उन्हें अपना भविष्य कैसे बनाना है और यहां तक कि उन्हें जीवन का अर्थ समझने में भी मदद करती है।

3. यह उन्हें सिखाता है कि वे अपने और अपने आस–पास के लोगों के लिए सबसे लाभप्रद तरीके से अपना नागरिक जीवन कैसे जिएं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

4. छात्रों को जीवन के परिप्रेक्ष्य को अधिक स्पष्ट रूप से समझने और जिम्मेदार नागरिक के रूप में सफल जीवन जीने में मदद करने के अलावा, मूल्य शिक्षा छात्रों को अधिक से अधिक जिम्मेदार और समझदार बनने में भी मदद करती है।

5. यह छात्रों को अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ मजबूत बंधन बनाने में सहायता करती है।

6. छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र को निखारती है।

7. मूल्य–आधारित शिक्षा छात्रों को जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करती है।

मूल्य शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020– किसी व्यक्ति का वास्तविक पहचान उसके चरित्र से होती है स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि "चरित्र गठन इंसान की प्रथम आवश्यकता है" इसी वजह से कहा जाता है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति का चारित्रिक गठन कर सके राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों के संपूर्ण विकास का खाका खींचती है क्योंकि आज का वैश्विक परिवेश ऐसा है जहां सिर्फ ज्ञान की महत्व नहीं है प्रतिस्पर्धा के बीच मानवी पहलू और मानवतावादी दृष्टिकोण जीवित रखना भी एक कठिन काम है । नई शिक्षा नीति इस बिंदु को केंद्र में रखकर तैयार की गई है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संकल्प में मूल्य आधारित एवं व्यक्तित्व विकास के शिक्षक को रेखांकित किया गया है इस नीति के माध्यम से तैयार विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण दिए जाने का भी प्रावधान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य आधारित शिक्षा तथा चरित्र निर्माण एवं समग्र विकास की शिक्षा पर विशेष बल दिया है ।

निष्कर्ष – मूल्य शिक्षा, शिक्षा का वह रूप है जो शिक्षार्थियों द्वारा करुणा, साहस, ईमानदारी आदि जैसे जीवन मूल्यों के अधिग्रहण पर जोर देती है, जो संतुलित व्यक्तियों के विकास में मदद करती है, जिससे एक मानवीय समाज का निर्माण होता है। मूल्य शिक्षा को एक अलग शैक्षणिक क्षेत्र मानने के बजाय शैक्षिक प्रक्रिया में एकीकृत किया जाना चाहिए। मूल्य शिक्षा के मूल्य को कई कोणों से समझा जा सकता है।आगे बढ़ने और आधुनिकता की दौड़ में आगे निकलते जाने की दुर्भावना ने मनुष्य को धर्म, मान्यताओं, परम्पराओं और शाश्वत मूल्यों की उपेक्षा करने को विवश किया और धीरे–धीरे उन्हें छोड़ दिया गया। आज धर्म, मान्यताएँ, परम्पराएँ और मूल्य रहित समाज एवं शिक्षा की जो स्थिति है, उसे स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। इसके दुष्परिणामों से धर्माचार्य, शिक्षाविद्, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, शिक्षक एवं अभिभावक सभी चिन्तित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय परंपरा भारतीय मूल्य और राष्ट्रीयता का भाव लिया गया। NEP- 2020 भारत तथा भारतीयता की भावना से घनीभूत है। इसमें हमारे सांस्कृतिक मूल्यों , ज्ञान तथा कौशल को विशेष महत्व दिया गया हैं। जिसके माध्यम से हमारे आने वाली पीढ़ी देश की अस्मिता उसकी पहचान तथा परंपरागत मूल्य एवं परंपरा से अवगत होगी। NEP–2020 में मूल्य शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देकर युवाओं में नैतिक मूल्यों का तेजी से हो रहे हैं गिरावट को भी रोकने में मदद मिलेगी ।

सन्दर्भ–

1. शर्मा डॉ. आर. एस. "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार" आर.लाल. बुक डिपो

2. अग्रवाल डॉ. संध्या (2005) वाराणसी "शिक्षा का सिद्धांत" विजय प्रकाशन मन्दिर

3. त्रिपाठी डॉ. नरेश चंद्र, डॉ. विश्वनाथ बिहारी (2005) आगरा "शिक्षा के नूतन आयाम" विनोद पुस्तक मंदिर

4. शर्मा रमा, शर्मा वी.पी. (2015) दिल्ली "मूल्य शिक्षा" अर्जुन पब्लिशिंग हाउस

5. श्री डॉ. जै (2007)दिल्ली "मूल्य पर्यावरण और मानवाधिकार की शिक्षा" शिप्रा पब्लिकेशन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

6. श्री डॉ. जै (2014) हमीरपुर "मूल्य शिक्षण" अंशह पब्लिशिंग हॉउस
7. मिश्र प्रो.भास्कर (2014) नई दिल्ली "मूल्य आधारित शिक्षा" कनिष्क पब्लिशर्स
8. प्रारूप शिक्षा नीति (2019) मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
9. https://Social-work.in. muly-kya-hai